MANI BHAVAN
GANDHI SANGRAHALAYA

PRESENTS

GLIMPSES
OF
GANDHI

Visualised & Created
by
Smt. SUSHEELA GOKHALE-PATEL

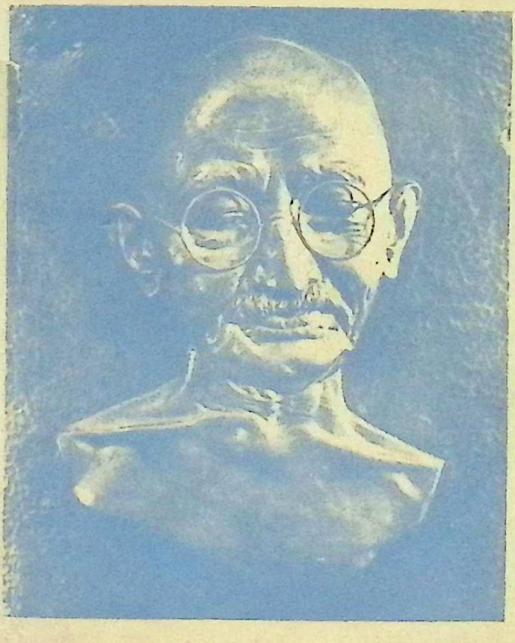

मणि भवन
गांधी संग्रहालय
प्रस्तुत
ीजी प्रदर्शन
निर्माण
सुशी ा गोखले - पटेल

THE LIBRARY

S. N. D. T.
WOMEN'S UNIVERSITY
BOMBAY.

19 C JAN 1944

18.892
[11] 16P.
Rs-25/-

MANI BHAVAN
GANDHI SANGRAHALAYA

PRESENTS

GLIMPSES OF GANDHI

Visualised & Created
by
Smt. SUSHEELA GOKHALE- PATEL

V 080 B
Gan/Gok

116150

Consultant
Dr. Usha Mehta
Photography
Umesh Karkera
Art work
Prasanna Kulkarni
Publisher
V. A. Nadkarni

Price : Rs. 25/-

Copyright
MANI BHAVAN GANDHI SANGRAHALAYA

मणि भवन
गांधी संग्रहालय

प्रस्तुत

गांधीजी प्रदर्शन

निर्माण

श्रीमती सुशीला गोखले - पटेल

सल्लागार : डॉ. उषा मेहता
छाया : उमेश करबेला
सजावट : प्रसन्न कुलकर्णी
प्रकाशक : बी. ए. नाडकर्णी

FOREWORD.

The exhibition 'Glimpses of Gandhi' through mini figures has been highly appreciated both by Indian and Foreign visitors who come to Mani Bhavan Museum - a place hallowed by its association with Gandhi for 17 long years from 1917 to 1934.

In response to the demand from teachers and students who find a very useful visual aid for understanding the history of the Indian struggle for freedom in the exhibition, we requested Shri V. A. Nadkarni to help us to reproduce the exhibition in a booklet form. We are thankful to him for his having responded to our request.

New discoveries in science have made Gandhi very relevant for our times. It is our hope that the booklet will generate interest in Gandhi's life and thought and acquaint the people with major events in our struggle for freedom fought under his unique leadership.

Usha Mehta

President
Mani Bhavan Gandhi Sangrahalaya

Mani Bhavan,
Bombay.
Date : 12th Aug. 1992.

आमुख

१९१७ से १९३५ तक गांधीजी के बंबई के निवास स्थान मणिभवन संग्रहालयका " गडिया द्वारा गांधीदर्शन " प्रदर्शनमें आनेवाले भारतीय व विदेशी सभी यात्रियोंको बहुत पसंद आता है।

कई शिक्षक व विद्यार्थी मानते हैं कि यह प्रदर्शन हमारे स्वातंत्र्य - संग्रामके इतिहास को समझनेके लिए एक अच्छा दृश्य माध्यम है और उन्होंने हमें इसको पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित करनेका आग्रह किया। उनकी सूचनानुसार हमने श्री. नाडकर्णीजीसे विनंति की कि वे इस कामकी जिम्मेदारी लें। उन्होंने उसको स्वीकार किया इस लिऐ हम उनके आभारी हैं।

विज्ञानके नये नये आविष्कारने यह साबितकर दिया है कि आजके युगके लिए गांधीजी व उनके उपदेश बहुत ही उपयुक्त हैं। हम आशा करते हैं कि इस पुस्तिकासे लोगोंको गांधीजीके जीवन और दर्शनको समझने में तथा उनके अजाड नेतृत्व में खेले गये स्वातंत्र्यसंग्रामकी महत्वकी घटनाओं का परिचय पाने में मदद मिलेगी।

उषा महेता।

उषा महेता
अध्यक्षा, मणिभवन
गांधी संग्रहालय

1. STEALING AND ATONEMENT 1883

Once Mohan stole a bit of gold, but it weighed heavily on his conscience. He made a confession to his father and asked for punishment. Sincere repentance won Mohan his father's affection.

१) चोरी और प्रायश्चित, १८८३

मोहन ने एकबार सोनेका टुकड़ा चुराया परंतु वह बात उसे खटकने लगी। उसने पिताजी के पास उस बातका एकरार किया और सजा मांगी सच्चे प्रायश्चितके कारण मोहनको पिताजीका प्यार मिला

2. NURSING HIS AILING FATHER
1884 - 1885

During five long years of his father's illness, Mohan nursed him and listened to discussions on different faiths.

२) बीमार पिताकी सुश्रुषा, १८८४ - १८८५

अपने पिताकी पांच सालकी लंबी बीमारीके दौरान मोहनने उनकी सुश्रुषा की। साथ साथ उसने विविध धर्मों पर चर्चा भी सुनी।

3. SEEIKING MOTHER'S PERMISSION
TO GO ABROAD, 1888

Mohan's mother consented going to England for further studies only after he took a vow not to touch wine, women and meat.

३) विदेश जानेके लिये मां की इजाजत , १८८८

मोहनके मांस , मदिरा और स्त्रीसंग से दूर रहनेकी प्रतिज्ञा लेने पर ही मोहनकी मां ने उसको उच्च शिक्षा के लिये इंग्लंड जानेकी इजाजत दी ।

On a complaint by a white passenger, M. K. Gandhi, Barrister-at-Law was thrown out of the first class rail-way compartment at Maritzburg in South Africa. This incident changed the course of his life.

४) रंगभेदका शिकार, १८९३

एक गोरे यात्री की फरियादके कारण, वकील गांधी को दक्षिण आफ्रीका के मारीट्सबर्ग शहर में पहले दर्जे के डिब्बे से बाहर फेंका गया। इस घटनाने गांधीजी के जीवनकी राह बदल दी।

5. THE EPIC MARCH, 1913

Hundreds of Indians marched from New Castle to Transval as a protest against3 tax. Their leader Gandhi was arrested three times in four days but they continued the march.

५) ऐतिहासिक कूच, १९१३

सैकड़ों हिन्दुस्तानियों ने उन पर लादे हुए तीन पौंडके करके खिलाफ न्युकेसलसे ट्रान्सवाल तक कूच किया। उनके नेता गांधीजी चार दिनमें तीन बार गिरफ्तार हुए फिर भी उन्होंने कूच जारी रखा।

6. RETURN OF THE HERO, 1915

On their return from South Africa after 21 years, Gandhi and Kasturbai were given an imposing reception in Bombay. People spontaneously addressed Gandhi as 'Mahatma' the great soul.

६) नेताका स्वदेशागमन, १९१५

दक्षिण आफ्रीका के २१ सालके निवासके बाद गांधीजी और कस्तूरबाई जब स्वदेश लौटे तब बंबई में उनका शानदार स्वागत हुआ। जनताने सहज रूपसे उनको महात्मा कहा।

7. STAIN OF INDIGO, 1917

Gandhi espoused the cause of the oppressed peasants on the indigo plantation in Bihar and launched his first civil disobedience movement in India.

७) नीलका दाग, १९१७

गांधीजी ने बिहारके नीलके खेतोंके कुचले हुए किसानोंके प्रति किये अन्यायके विरुध्द हिन्दुस्तान में सर्वप्रथम सत्याग्रह किया। इसके कारण ताजिनी तौर पर की जानेवाली नीलकी खेती बंद कर दी गयी।

8. THE JALLIANWALA BAGH MASSACRE, 1919

Gandhi investigated into the attrocities committed by General Dyer on a peaceful gathering at Amritsar, killing 375 and injuring 1,000 and more unarmed, unwarned people.

८) जालियनवाला बाग हत्याकांड, १९१९

अमृतसर में शांतिमय सभामें जनरल डायरने निर्दोष और निहत्थी जनता पर किये अत्याचारके कारण ३७५ लोग मारे गये और १००० से ज्यादा जख्मी हुवे। गांधीजीने इस हत्याकांड की जांच की।

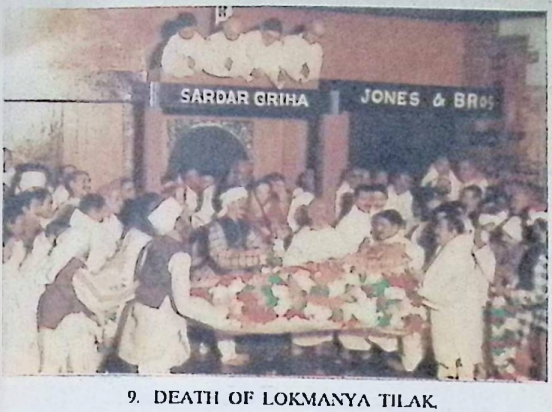

9. DEATH OF LOKMANYA TILAK, 1920

All classes and communities of people participated in the funeral procession of Bal Gangadhar Tilak in Bombay. Gandhi said : "A gaint among men has fallen."

९) लोकमान्य तिलक का निधन , १९२०

बंबई में लोकमान्य तिलक की स्मशान यात्रामें सब वर्गों और कोमों के लोग शामिल हुए। गांधीजीने श्रद्धांजलि दी " एक नरकेसरी चल बसा ।"

10. BONFIRE OF FOREIGN CLOTH, 1921

Gandhi inaugurated the campaign for the boycott of foreign cloth by kindling an immense bonfire in Bombay for economic emancipation of India.

१०) विदेशी कपडोंकी होली, १९२१

हिन्दुस्तानके आर्थिक उत्कर्ष के लिये बंबई में विदेशी कपडोंकी होली जलाकर गांधीजीने बहिष्कार आंदोलन शुरू किया।

11. THE GREAT TRIAL, 1922

Gandhi was tried for sedition, in March. Pleading guilty he said "I hold it to be a virtue to be disaffected towards a government which has done more harm to India than any previous system." He was sentenced to six years' imprisonment.

११) ऐतिहासिक मुकद्मा, १९२२

मार्च महिनेमें गांधीजी पर राजद्रोहके लिये मुकद्मा चलाया गया। गुनाह कबूल करते हुए उन्होंने कहा, "जिस सरकारने हर तरह से हिन्दुस्तानको पामाल किया है उससे बेवफा होना मैं अपना धर्म समझता हूँ। उनको ६ सालकी सजा हुई।

12. KHADI AND VILLAGE INDUSTRIES.

The inhuman destruction of village-industries was corroding Gandhi's heart. He believed that their restoration alone would feed the hungry millions.

१२) खादी और ग्रामोद्योग,

ग्रामोद्योगोंके नाशसे गांधीजीको बहुत दुख हुआ। वे मानते थे कि उनके पुनरुद्धारसे ही भूखी जनताकी भूख मिट सकती है।

13. THE DANDI MARCH, 1930

On March 12, sixty one year old Gandhi started the great march of liberty from Sabarmati Ashram with a strong resolve to break the inhuman salt-law.

१३) दांडी-कूच, १९३०

मार्च १२ को ६१ सालके गांधीजीने अमानुषी नमक-कायदे का भंग करने के, दृढ संकल्प के साथ साबरमती आश्रमसे स्वातंत्र्य-कूच शुरू किया

14. THE SALT SATYAGRAHA, 1930

On April 6, Gandhi broke the nefarious Salt-law at Dandi. Despite brutal assaults on the people, the war against the salt-tax spread to far flung regions. India was seething in revolt. Gandhi was arrested on May 4.

१४) नमक - सत्याग्रह, १९३०

६ अप्रैलको गांधीजीने समुद्र तट पर नमक का काला कायदा तोड दिया। जालिम हमलों के बावजूद, नमक-सत्याग्रह देशके कोने कोने में फैल गया। ४ मई को गांधीजी को गिरफ्तार किया गया।

116150

15. MEETING THE KING IN LONDON, 1931

Gandhi went to London to attend the Round Table Conference. On being invited by the King, he went to Buckingham palace in his usual dress.

१५) लंडनमें शाहंशाह से मुलाकात, १९३१

गांधीजी गोलमेज परिषदके लिये लंडन गये। शाहंशाहसे आमंत्रण मिलनेपर वे अपने हमेशाके लिबासमे ही बकींगहैम महल में गये।

16. AMONG THE WORKERS, LONDON, 1931

Gandhi planted a tree outside Kingsley Hall, East End, where he stayed with the workers for twelve weeks.

१६) लंडन में मजदूरोंके बीच, १९३१

इस्ट एंडके किंग्स्ली हॉल में गांधीजी १२ हफ्ते मजदूरों के साथ रहे वहाँ उन्होंने पौधा लगाया।

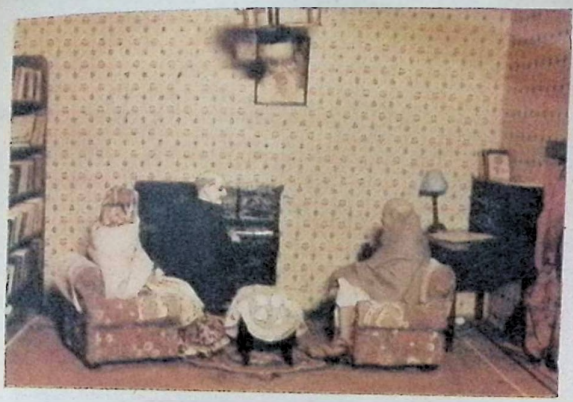

17. WITH ROMAIN ROLLAND, 1931

Gandhi discussed with Romain Rolland at Geneva the evil effects of war and the efficacy of non-violence. At Gandhi's request, Rolland played Beethoven's fifth symphony on the piano.

१७) रोमा रोलांके साथ, १९३१

गांधीजी ने जीनीवामें रोमाँ रोलांके साथ युद्ध के अनिष्ट परिणामों और अहिंसा की अमोघशक्ति पर चर्चा की। गांधीजी के कहने पर रोमाँ रोलांने पियानो पर बिथोवन की ५ वी सिंफनी बजायी।

18. FAST FOR THE ERADICATION OF UNTOUCHABILITY, 1932

Gandhi was arrested on his return from England. On September 20, he commenced his fast unto death in the prison for eradicating untouchability. On the leaders signing a pact, the fast was broken after six days.

१८) अस्पृश्यता निवारणके लिये अनशन, १९३२

इंग्लंडसे लौटने पर गांधीजीको गिरफ्तार किया गया। २० सितंबरको उन्होंने अस्पृश्यताके निवारणके लिये यरवडा जेलमें आमरण उपवास शुरू किये। ६ दिनके बाद बाहरके नेताओंके बीच समझोता होने पर उन्होंने उपवास तोडे।

19. THE CURSE OF UNTOUCHABILITY

Gandhi pleaded for the uplift of the downtrodden untouchables and for restoring equality between man and man.

१९) अस्पृश्यताका कलंक

गांधीजीने दलित अछुतोंके उध्दार तथा मनुष्य मनुष्यके बीच समानता स्थापित करनेका अनुरोध किया।

20. WITH POET TAGORE, 1940

The two apostles of India's regeneration -Gandhi and Tagore met at Shantiniketan.

२०) कविवर टागोरके साथ, १९४०

भारतके पुनरुत्थानके दो दूत - गांधीजी और टागोर शान्तिनिकेतन में मिले। गांधीजी का स्वागत करते हुए टागोरने कहा कि," गांधी सारी मनुष्यजातिके हैं।"

21. QUIT INDIA, 1942

On the A.I.C.C. passing the 'Quit India' Resolution on August 8, to end the British rule, Gandhi gave a dictum for the non-violent soldier of freedom, 'Do or Die'. On Gandhi's detention, India's national pride rose in revolt.

२१) हिंद छोडो, १९४२

८ आगस्तको अंग्रेजी हुकूमतको खत्म करनेके लिये अखिल भारतीय कॉंग्रेस समितिके हिंद छोडो प्रस्ताव पारित करने पर, गांधीजी ने स्वातंत्र्य संग्रामके अहिंसक सैनिकके लिये 'करो या मरो' का मंत्र दिया। गांधीजी के नजर बंद किये जाने पर भारतका राष्ट्रीय अभिमान जाग उठा।

22. DEATH OF KASTURBA, 1944

Gandhi's 74 years old wife Kasturba died as prisoner on February, 22.
Thus ended their 62 years old companionship.

२२) कस्तूरबा का निधन, १९४४

फरवरी, २२ को ७४ सालकी कस्तूरबाका बंदी अवस्थामें निधन हुआ। इससे गांधीजी और कस्तूरबाके ६२ सालका दांपत्यजीवन समाप्त हुआ।

23. PILGRIM OF PEACE, 1946-47

Gandhi set out on his pilgrimage of peace in riot-wrecked Bengal to establish unity between the two sister-communities. His message was, "The cry of blood for blood is barbarous."

२३) शांति - दूत, १९४६-४७

दंगेसे पीडित बंगाल में हिंदू और मुस्लीमों के बीच
एकता कायम करने के लिये गांधीजी ने अपनी
शांतियात्रा शुरू की ।
उनका संदेश था, 'खूनके बदले खूनका नारा
जंगली है ।'

24. IN RIOT-WRECKED BIHAR, 1947

Gandhi came to Patna to comfort the victims of communal frenzy. He exhorted the Hindus and the Muslims to live together in a filial spirit. He brought love where hatred and cunning had ruled.

२४) आतंकग्रस्त बिहार में, १९४७

दंगेसे पीडित जनताको धीरज बंधाने गांधीजी
पटना आये । उन्होंने हिंदू और मुस्लीमों को
भाईभाई की तरह रहनेको समझाया और द्वेष
भावको दूर कर प्रेमका वातावरण स्थापित किया
।

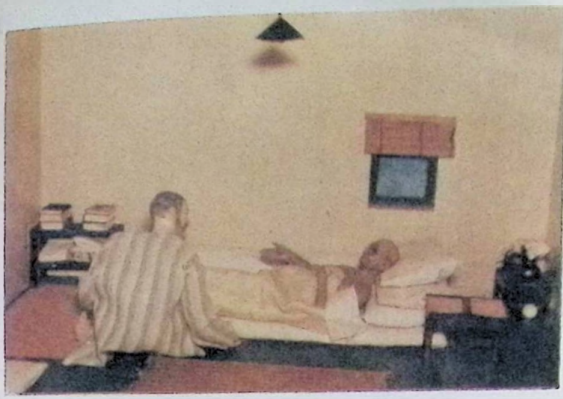

25. GANDHI & GAFFAR KHAN, 1947

The impending division of the country was a deep source of agony to Gandhi and Gaffar Khan. Gaffar Khan took leave of Gandhi with a heavy heart and left for his home town in Pakistan. They never met again.

२५) गांधीजी और गफ्फारखान, १९४७

देशके होनेवाले बंटवारेसे गांधीजी और गफ्फारखान दोनों व्यथित थे। गफ्फारखानने भारी दिलसे गांधीजीकी विदाई ली और वे पाकिस्तानमें अपने गांवकी ओर चल पड़े। यह दोनोंकी आखिरी मुलाकात थी।

26. FAST FOR COMMUNAL HARMONY, 1947

On September 1, Gandhi began his fast to end communal frenzy searching in all concerned. The hooligans surrendered their weapons. Gandhi broke his fast on the restoration of peace.

२६) कौमी एकताके लिये उपवास, १९४७

कलकत्तेके बेकाबू दंगोंके अंतके लिये गांधीजी ने १ सितंबरसे उपवास शुरू किये। इससे सबकी अंतरात्मा जाग्रत हुई और गुंडोंने शस्त्रोंका त्याग किया। शांति कायम होने पर गांधीजी ने उपवास छोड़े

116150

27. MARTYRDOM, 1948

On January 30 at the sun-set-hour, the perverse
assassi n of the ages lodged hot lead in the soft
flesh of Mohandas Karamchand Gandhi. His mind
was concentrated on God and he merged in Him.
He had said, "If I am to die by the bullet of a mad
man I must do so smilling".
He was the Victorious One in death as in l ife.

२७) शहादत, १९४८

३० जनवरीकी शामको युगयुगसे दुष्ट हत्यारेने मोहनदास
करमचंद गांधी के कोमल शरीरमें आगबरसाती गोलियाँ
दाग दीं। गांधीजी का मन ईश्वरमें लीन था और वे
ईश्वरमय हो गये। उन्होंने कहा था कि, "अगर मुझे
किसी पगलेकी गोलीका शिकार बनना पडे तो मुझे
हँसते हँसते मौतका सामना करना चाहिये।"
उन्होंने जिंदगीकी तरह मौतपर भी विजय पायी।

28. THE WORLD BOWED IN HOMAGE 1948

On January 31, Gandhi's body was laid on a
sandal wood pyre at Rajghat, Delhi.
From the pyre comes the message ;
Lead me from the Unreal to the Real.
From Darkness to Light, From Death to immortality.

२८) विश्वकी श्रद्धांजलि, १९४८

जनवरी ३१ को गांधीजीका पार्थिव शरीर दिल्लीके
राजघाट पर चंदनकी चितापर रखा गया।
चितासे संदेश आता है :
असत्यसे सत्यकी ओर अंधकारसे प्रकाशकी ओर मृत्युसे अमरत्वकी ओर
ले चल।

MANI BHAVAN
GANDHI SANGRAHALAYA

Mani Bhavan Gandhi Museum is a National Memorial to Mahatma Gandhi, Father of the Indian nation.

Historical Significance : 1917 to 1934

- Gandhiji took his first lessons in spinning and his first glass of goat's milk here.
- The first mass satyagraha against the Rowlatt Act curbing the freedom of the Press was launched from here - 1919.
- Gandhiji fasted for restoring communal harmony in Bombay 1921.
- Call was given to the Country to observe January 26 as Independence Day.
- The decision to launch civil disobedience for Swaraj taken in 1931.
- Gandhiji was arrested here in January, 1932.
- Served as the Head Quarter of Indian National Congress till 1934.

PRESENT ACTIVITIES :

- Library of more than 50,000 books by and on
- Gandhiji's Life and thought and allied subjects
- Museum depicting important events in Gandhi's Life through Minifigures a Pictures.
- Research Institute in Gandhian Thought and
- Rural Development Recognised by the Bombay University.
- Post graduate classes in Rural Development.
- Film shows on Gandhiji and freedom struggle.
- Competition for school and college students seminars, talks and discussions on Gandhian thought and important National and International problems.

MAHATMA GANDHI [1869 - 1948]
Highlights of Gandhiji's Life

2/10/1869	:	Birth at Porbunder in Gujarat.
1888 - 1891	:	Studied in England
1893 -1915	:	Stay in South Africa.
1913	:	Epic march against tax.
1915	:	Return to India. Establishment of Sabarmati Ashram
1917	:	Satyagraha of Indigo-workers in Champaran, Bihar 1917
1919	:	First Mass-Satyagraha against Rowlatt Bill
1930	:	Historic Dandi March to break the salt law
1931	:	Participated in the Round Table conference as the sole Representative of the Congress.
1932	:	Satyagraha restarted. Fast against Communal Award
1939	:	Individal Satyagraha.
1942	:	Quit-India Movement and Detention in Agakhan Palace
1944	:	Kasturba's Death in Agakhan Palace
1947	:	India becomes Independent.
1947	:	Fast for establishing peace in Delhi.
1948	:	Met Martyrdom on January, 30.

Mani Bhavan, a place where Gandhiji lived and conversed with his colleagues, moulded the nation in the image of his cherished ideals of Truth and Non-violance is now a source of inspiration for freedom and peace loving men and women all over the world.

मणि - भवन
गांधी संग्रहालय
१९१७ - १९३४

मणि-भवन, लेबरनम रोड, गामदेवी, बम्बई,
उन स्थानोंमेंसे है जो महात्मा गांधी के संपर्क से पवित्र बनगया है।

ऐतिहासिक महत्व

१९१७ में मणि-भवन के पास रोज आनेवाले एक पिंजारे से गांधीजी धुलाई के पहले पाठ सीखे। वे कातना भी यहीं सीखे। १९१९ में जब उनकी तबीयत बहुत खराब थी तब कस्तूरबा के आग्रह को वश होकर उन्होंने यहीं बकरी का दूध पीना शुरू किया।

बंबई में शान्ति स्थापित करने के लिए गांधीजी ने १९ नवंबर को ऐतिहासिक उपवास शुरू किया।

रौलट कानून के विरूध्द सत्याग्रह यहीं मार्च १९१९ में शुरू हुआ था।

१९३० में गांधीजी ने यहाँ से जनवरी २६ को स्वातंत्र्यदिन मनाने का और स्वार्पण द्वारा स्वराज प्राप्त करने की प्रतिज्ञा लेने का एलान किया।

दिसंबर ३१, १९३१ को आधी रात को स्वराज के लिए असहकार आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया।

जनवरी ४, १९३२ को बडे सबेरे गांधीजी मणि-भवन के छत पर उनके तंबू में गिरफ्तार किये गये।

जून २७ और २८, १९३४ को काँग्रेस कार्यकारिणी की एक और बैठक यहीं हुई। यह गांधीजी का मणि-भवन में अन्तिम निवास था।

वर्तमान गतिविधियाँ

पुस्तकालय के दो विभाग हैं। एक संदर्भ ग्रंथों का और दूसरा उन किताबों का जो घर पर दी जाती है। उसमें गांधीजीकी लिखी हुई, गांधीजी पर लिखी हुई और गांधीजी के जीवन और दर्शन को समझने में उपयोगी किताबों का समावेश किया गया है।

और कमरों में एक चित्रावली है जिसमें गांधीजी के मणि-भवन के निवास की तथा उनके जीवन के महत्व के प्रसंगों की झाँकियाँ दिखायी गयी है।

मणि-भवन को बंबई विश्वविद्यालय की ओरसे गांधी-विचार और ग्रामविकास के लिए संशोधन-केंद्र के रूप में मान्यता मिली है। उसकी ओर से ग्राम-विकास के अनुस्नातक विद्यार्थियों के लिए ऐम्. ऐ. के वर्ग चलाये जाते हैं।

पहले माले पर सभागृह है जहाँ गांधी अभ्यास-वर्तुलकी बैठकें, सभायें, परिसंवाद आदि कार्यक्रमोंका आयोजन किया जाता है और 'महात्मा' तथा गांधीजी संबंधित चलचित्र दिखाये जाते हैं।

महात्मा गांधी (१८६९-१९४८)
गांधीजी के जीवनकी घटनायें :

२.१०.१८६९	:	पोरबंदर (गुजरात) में जन्म
१८८८ - १८९१	:	इंगलंड में विद्यार्थी
१८९३ - १९१५	:	दक्षिण आफ्रीका में निवास
१९१३	:	अन्यायी करके विरूध्द ऐतिहासिक कूच
१९१५	:	भारत में पुनरागमन - साबरमती आश्रमकी स्थापना
१९१७	:	चंपारण (बिहार) में नीले मजदूरोंका सत्याग्रह
१९१८	:	रौलट बीलके विरूध्द पहला जन-आंदोलन
१९३०	:	दांडी-यात्रासे नमक सत्याग्रह की शुरूआत
१९३१	:	कांग्रेसके एकमात्र प्रतिनिधि की हेसियतसे गोलमेज परिषद में
१९३२	:	सत्याग्रहकी फिरसे शुरूआत कोमी निर्णयके विरोधमें उपवास
१९३९	:	व्यक्तिगत सत्याग्रह
१९४२	:	भारत-छोडो आंदोलन व पुनेके आगाखान महल में नजर कैद
१९४४	:	आगाखान महल में कस्तूरबाका निधन
१९४७	:	भारत स्वतंत्र हुआ
१९४७	:	दिल्ली में शांति कायम करने के लिये अनशन
१९४८	:	जनवरी ३० को शहीद हुए

मणि-भवन वह जगह है जहाँ गांधीजी रहे और अपने साथियों से सलाह-मशविरा किया; जहाँ से उन्होंने सत्य और अहिंसा के अपने बहुमूल्य आदर्शों पर चलने के लिए राष्ट्र को तैयार किया तथा अपने अनुयायियों को सेवा समर्पण की भावना से काम करने को प्रेरित किया। राष्ट्रपिता का एक समय का निवासस्थान मणि-भवन आज दुनिया के शांति और स्वातंत्र्यप्रिय लोगों के लिए प्रेरणास्थान बन गया है।

Date Due

V 080 B
Gan/Gok
116150

AUTHOR Gokhale-Patel, S.
TITLE Glimpses of Gandhi

DATE DUE	BORROWER'S NAME

V 080 B
Gan/Gok
116150

Announcing

1) Glimpses of Gandhi

Marathi, Gujarati

Editions on 2 October 92

2) Mahatma Gandhi
and

Mani Bhavan

in English, Hindi Marathi

Gujarati on 30th January 93.

TRUTH. NON-VIOLENCE

Published by
SHRI V. A. NADKARNI
DARSHANA INTERNATIONAL
2-MAKARAND
RAJENDRA PRASAD ROAD
DOMBIVLI [EAST] PIN 421 201
THANA
Tel: 464111
MAHARASHTRA STATE
INDIA

Printers :
DOTLINE
UNITY, 10 Abhiram Co. Op. Hsg. Soc.
Shiv Mandir Rd.,
Dombivli [East] 421201